22-5-01
अमरकंटक

(पवन) (अनु)

आयुष्मान पवन, आयुष्मति अनुराधा,

सर्वतो सुखी समाधान स्मरण!

आपका पत्र मिला, उसे विधिवत अध्ययन किया, प्रसन्नता का अनुभव हुआ। आप अपने ढंग से विगत को एक समालोचना विधि से सवालों को प्रस्तुत किया। जबकि विगत सहअस्तित्व से समाः - लोचित नहीं होता, अपितु सह अस्तित्व को पाने की तड़प में क्रमिक सोपान हो सकता है, मंजिल सोपान नहीं है। सह-अस्तित्व मंजिल का ही अध्ययन ही है, उसी आधार पर आपके सवालों का उत्तर प्रस्तुत किया है.....

प्र०1:- पहली जिज्ञासा समाधि के बाद ही सभी उर पर्यंत विचार शमन होते हैं तब तक अस्तित्व में शमन हो होने का कोई कायदा नहीं है।

क्योंकि भ्रमित मानव परम्परा जीवों के सदृश्य जीने के लिए प्रेरणा पाता हुआ देखने को मिल रहा है, जीवों की जिन्दगी संवेदनाओं में सीमित हुई है।

समाधि के अनन्तर विचारों में, विचारों की

गति अवरोध जैसे हो जाती है, क्योंकि समाधि में शरीर और देशकाल का बोध नहीं रहता, वही स्मृतियाँ समाधि के अनन्तर संवेदनाओं के प्रभाव से मुक्त रहता है, इस प्रकार से विपरीत रहना देखा गया है, इससे कोई ज्ञानार्जन नहीं होता, ऐसा माना गया है। ऐसा होता है।

सहअस्तित्व वादी विश्व दृष्टिकोण के अनुसार हर नर-नारी समझदार होना सम्भव है। सहअस्तित्व वादि समझदारी, समाधि में जो नहीं हो पाया वह समझदारी के रूप में आपको, हमें सहअस्तित्व पूर्ण ज्ञान, फलस्वरूप विज्ञान, विवेक पूर्ण कार्य व्यवहार, फलस्वरूप अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का सम्भावना स्पष्ट होती है।

जबकी समाधि सम्बन्धित विचार विरल रूप में होने वाली सफलता एकांतवादी होती है, अथवा व्यक्तिवादी होती है, अथवा रहस्यवादी होती है। जबकी सहअस्तित्ववाद व्यक्तिवादी होता ही नहीं है। सहअस्तित्व स्वयं में व्यक्तिवादी होना सम्भव नहीं है। इस प्रकार से सहअस्तित्व वादी विवेक, विज्ञान के लिए समाधि की अवश्यकता नहीं है बल्की समझदारी की अवश्यकता है।

प्र० २:- आपका पूछना है :- सहअस्तित्व वादी विधि से समझदार हो जाते हैं, क्या?

सहअस्तित्ववादी विधि से समझदार होते हैं। सहअस्तित्ववादी विधि से अनुभव, अनुभव विधि से प्रमाण, प्रमाण विधि से समझदारी, समझदारी विधि से पुष्टी देखा गया है। इसमें समाधि की कोई अवश्यकता बनती ही नहीं।

मानसिक वैचारिक साक्षात्कार बोध अनुभव क्रियाओं में सन्तुलन सदा-सदा के लिए होना हो जाता है, फलस्वरूप मानव में संज्ञानशीलता पूर्वक संवेदनाएँ नियंत्रित हो जाती है, जिसके फलन में द्रोह-विद्रोह शोषण और युद्ध मुक्त समाज और सार्वभौम व्यवस्था प्रमाणित होना बन जाता है। इसकी अवश्यकता बनती हुई प्रदूषण जिसका प्रमाण धरती ही तापग्रस्त होती देखने को मिलती सी रही है और बढ़ता हुआ भ्रष्टा-

चार और विविध प्रकार से बढ़ता हुआ रोग, बढ़ता हुआ तनाव, बढ़ता हुआ मिलावट, बढ़ता हुआ शोषण प्रवृति से मुक्ति होने का रास्ता साथ में समाधान, समृद्धि पूर्वक जीने की सम्भावना उदय होने के रूप से स्पष्ट हुई।

प्र० 3. व्यापक और ईकाई कुछ नहीं करता इस प्रकार एक रिक्तता की कल्पना आती है ये बात आपने कहा है?

आगणित ईकाईयाँ करने के लिए, सदा-सदा तत्पर हैं वह भी व्यापक में, इस बात को स्मरण में लाने से अनुमान हो जाने से व्यापक में ही हम जागृत हो जाते हैं अन्यथा और कोई आधार ही नहीं है। सम्पूर्ण क्रिया कलाप ईकाईयों में, से, के लिए सुस्पष्ट है। सम्पूर्ण ईकाईयाँ व्यापक में डूबी, घिरी, भीगी हैं।

व्यापक में वस्तु अपने वैभव के रूप में पारगामी, पारदर्शी होना स्पष्ट किया गया है, सर्वत्र इसमें रिक्तता कहाँ है अपितु इसे सहअस्तित्व नाम से सम्बोधित किया है। इसका स्वरूप व्यापक में छोटे से छोटे, बड़े से बड़े ईकाईयाँ अविभाज्य रूप में वर्तमान है। व्यापक वस्तु न हो ऐसा कोई स्थान नहीं है। इस प्रकार से व्यापक वस्तु में आप हम सब सम्पूर्ण क्रिया-कलाप करते हैं। यदि सम्पूर्ण वस्तुओं में ऊर्जा सम्पन्नता की नित्य उपलब्धि है, व्यापक वस्तु पारगामी होने के आधार पर हर वस्तु ऊर्जा सम्पन्न होना पाया गया है।

इस प्रकार से सहअस्तित्व का प्रभाव नित्य प्रभावी होना देखा गया है, जिसका दृष्टा, करता, भोक्ता के रूप में मानव है, करता, भोक्ता के रूप में अन्य प्रकृति जैसे जीवसंसार, वनस्पतिसंसार और पदार्थ-संसार होना पाया जाता है। मानव ज्ञानावस्था में होने का प्रमाण ही है दृष्टा, करता, भोक्ता, ज्ञाता, ज्ञानसम्पन्नता और जानने की वस्तु, इन विधाओं में अध्ययन पूर्वक पारंगत होना और अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होना ही ज्ञानावस्था रूपी मानव का वैभव है।

समाधि के विषय में लिख चुके हैं और जब आप से भेंट होगी तब विस्तार

में चर्चा होगी। इस प्रकार से मानव ही व्यापक में एक-एक को जाचने वाला, है मानव ही एक-एक के आचरण को पहचानने वाला है।

विश्वास है आपके सभी प्रश्नों का उत्तर सन्तुष्टि का स्रोत बनेगा जुलाई प्रथम सप्ताह में आप यहाँ रहेंगे। आयुष्मति अनुराधा आएगी, यह आपने स्पष्ट नहीं किया है अत: इसे स्पष्ट कीजिए। आप हिमालय के किसी एक चोटी में हैं ही, आपके सम्मुख कार्य भी वैसा ही है।

शेष शुभ,

आपका,

A. N. Sharma



उत्तर नागराज जी द्वारा | 13/6/2001

## अशोक – प्रवीन के प्रश्न

① समाधानित होने के पश्चात धरती पर स्वराज्य होने के पश्चात क्या कार्य करने को शेष रहेगा।

उत्तर → स्वराज्य की निरन्तरता का कार्य सदैव रहेगा ही।

② जीवन-शरीर के संयोग का स्वरूप क्या है।

उत्तर → जीवन 5 वे माह में शरीर का संचालन शुरु कर देता है।

③ परमाणुओं में भिन्नता का आधार परिवेशीय अंश है या केन्द्रिय या दोनों।

उत्तर → परिवेशीय तथा केन्द्रिय अंशों की संख्या दोनो के आधार पर

④ जड में पाँच बलों का स्वरूप

उत्तर ① चुम्बकीय बल
② गुरुत्वाकर्षण बल
③ सामान्य हस्तक्षेप
④ क्षीण हस्तक्षेप
⑤ मध्यस्थ बल